हितीयगाई चंतुर्थपादे च

| क्ट्सां हत्तिनामानि । | इन्दर्सा लच्चग्रवाः। | क्रन्दसासुदाष्टरवानि । |
|-----------------------------|--|--|
| भद्रविराड १०।११ वृत्तिः। | चोचे तपरी जरी गुरु चेत् मुसी ज्गी ग् भद्र- | |
| | विराड् भवेदनीचे | |
| प्रथमपादे लतीयपादे च | 5,515,151,165 | |
| द्वितीयपादे चतुर्थपादे च | 2,5,151,511,555 | |
| केतुमती १०।११ वृत्तिः। | असमे सर्जी सगुरयुक्ती केतुमती समे भरनगाद् | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 5,511,151,511 | |
| हितीयपादे चतुर्थपादे च | 211,212,111,2.2 | |
| विषयीतपूर्वा ११।११ वृत्तिः। | जती जगीं भी विषये समे चैत् सौ ज्गी ग एवा विषयीतपूर्वना | |
| प्रथमपाद हतीयपादे च | 171,771,171,2,7 | |
| द्वितीयपादे चतुर्थपादे च | 221,221,121,2,2 | |
| व्याखानकी ११।१२ हितः। | व्याखानकी ती जगुरू ग बोजे जतावनीजे जगुरू गुरुचेत् | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 221,221,121,7,2 | |
| हितीयपादे चतुर्थपादे च | 201,001,101,05,0 | |
| हरियमुता ११।१२ छत्ति:। | च्युंचि प्रथमेन विविच्चितं द्वतविलिन्तिकं इरियामुता | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 11,711,711,717 | |
| दितीयपादे चतुर्थपादे च | 11,211,211,212 | स्मुटफेनच्या हरिणवृता विलमनोज्ञतटा तरणे: सुना। कलहंसकुलारवधालिनी विहरतों हरति स हरेमेंन: ॥ |
| tadiante affantie a | land and the state of the state | विवहसंकुलारवधालिंगा विहरता हरात स्त हरनानः ॥ |
| चपरवक्तुम् ११।१२ वृक्तिः। | अयुजि ननरता गुरु: समे तदपरवक्षमिरं नजी जरी | |
| प्रथमे हतीये च पादे | 111,111,717,1,7 | |
| द्वितीये चतुर्थे च पाई | 111,101,101,010 | स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभिक्तमपरवक्षमवेता माधवम् । च्यायुवितगरी: समं स्थित्। वजवनिता प्रतिचित्तविभमाः । |
| इतमधा ११।१२ वृत्तिः। | भन्यभोन्यातं गुरुकी चेद् युनि च नजी | व्हरायुवातरायः, तम स्थितः प्रचमानता द्वताचरामननाः। |
| | च्ययुतौ हतसधा | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 211,711,7,7 | |
| द्वितीयपादे चतुर्थपादे च | 111,121,151 | [마시다 : [[[[[[[[[[[[[[[[[[|
| मालभारियी ११।१२ हितः। | विषमे ससजा यदा गुरू चेत् सभरा येग तु मालमारिकीयम् | |
| प्रथमपादे वतीयपादे च | . 5,5,15,511,511 | |
| दितीयपादे चतुर्थपादे च | 221,215,115,211 | |
| कौसुदी १२।१२ वृत्ति:। | अधुचि वनभभा समकेश्रीप तु नधुगर्धुमलं तदा कौसुदी | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 111,111,711,711 | |
| दितीयपादे चतुर्थपादे च | \$15,515,111 | |
| पृष्यताया १२।१३ हितः। | अञ्चित्र नयुगरेषतो यकारी युक्ति च नजौ जरगास्त्र पुष्पिताया | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 111,111,212,132 | कर्किसलयण्रीभया विभान्ती कुचणलभार्विनम्बदे ह्यारः |
| दितीयपादे चतुर्थपादे च | 2,515,151,111 | स्तितर्वाचपुव्यताया वनयुवितवतती हरेम्देश्स |
| जवसती १२।१३ हत्ति:। | स्थादयुम्मके रजी रयी समे किंतू जरी जरी गुरुक्जवात परा मतीयम् | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | \$15,151,515 | and the second of the second o |
| हितीयपादं चतुर्थपादे च | 2,515,151,515,151 | |
| मझुसौरभम् १२।१३ वृत्तिः। | यहि विषसे भवती नजी नहीं सनयाः समे तु नगी मञ्जरीरमम् | |
| प्रथमपादे हतीयपादे च | 111,121,121,312 | |
| अवसमाद हतायमाद प | 111,101,101,010 | |

2,151,551,151,511